शिक्षा में प्रयोगवाद या प्रयोजनवाद

प्रयोजनवाद का अर्थ एवं परिभाषा

अंग्रेजी में प्रयोजनवाद को pragmatism कहते हैं, जिसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा के Pragma से हुई है। अथवा यूनानी शब्द Pragmatikosh से हुई है, प्रैग्मा का अर्थ है किया गया काम। Pragmatikosh उसका अर्थ है व्यावहारिकता। विलियम जेम्स के अनुसार-प्रयोजनवाद मस्तिष्क का स्वभाव और दृष्टिकोण है यह सत्य और विचारों की प्रकृति का भी सिद्धांत है और अंतिम रूप से यह वास्तविकता संबंधी सिद्धांत है।

प्रयोजनवाद के प्रकार -

1-मानवतावादी प्रयोजनवाद

2-प्रयोगवादी प्रयोजनवाद

3-जीव विज्ञान वादी प्रयोजनवाद

4-नामरूप वादी प्रयोजनवाद

प्रयोजनवाद और शिक्षा के उद्देश्य

1-नवीन मूल्यों एवं आदर्शों का निर्धारण

2-गतिशीलता का विकास

3-उचित अनुभव प्राप्त करना

4-सामाजिक कुशलता का विकास

5-लोकतंत्र जीवन के लिए रक्षा

प्रयोजनवाद और पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम को 4 सिद्धांतों के अनुसार बांटा के हैं जो अलग नहीं परंतु से संबंधित है।

1-व्यावहारिकता का सिद्धांत

2-क्रिया और अनुभव का सिद्धांत

3-बालक की रूचि का सिद्धांत

4-एकीकरण का सिद्धांत

प्रयोजनवाद व शिक्षण विधियां

1-अनुभव से सीखना या करके सीखना

2-उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया से शिक्षा

3-एकीकरण से शिक्षा

4-योजना पद्धति

5-समस्या समाधान विधि

प्रयोजनवाद और शिक्षक की भूमिका

शिक्षक बालक से प्रेम, सहानुभूति और मित्रता पूर्ण व्यवहार करें और उसमें सामाजिक कुशलता का विकास करें। शिक्षक छात्रों के रुचियां को इस तरह प्रेरित करें ताकि वह समस्याओं को कुशलता बुद्धिमानी और सहयोग से हल करने में सफल हो। शिक्षक का स्थान सहायक, मार्गदर्शक और सलाहकार के रूप में होता है।

प्रयोजनवाद और अनुशासन-आत्मानुशासन की बात की गई है।

प्रयोजनवाद के गुण

1-प्रयोजनवाद विचार के बजाय क्रिया को अधिक महत्व देता है।

2-प्रयोजनवाद शिक्षा बाल केंद्रित शिक्षा है।

3-विद्यालय को एक छोटे समाज के रूप में स्वीकार किया गया।

4-प्रयोजनवाद के अंतर्गत जनतांत्रिक शिक्षा और सामाजिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया गया।

5-इस विचारधारा में शिक्षा के सहयोग से बालक को व्यवहारिक जीवन के लिए तैयार करना।

प्रयोजनवाद के दोष

1-सर्वप्रथम तो प्रयोजनवाद शिक्षा का कोई निश्चित उद्देश्य नहीं देता।

2-इनकी मान्यता है कि वहां ही सत्य है जो कि उपयोगी परिणाम दे।

3-सत्य में सदैव परिवर्तन होता रहता है।

4-सिद्धांत पर नहीं व्यवहार पर बल।

5-यह सांस्कृतिक आदर्शों को स्थान देने में विश्वास नहीं रखता।